



PURUSHOTTAM MASS (AN EXTRA MONTH IN HINDU CALANDER)

MADAN MOHAN NAURIYAL

Government Intermediate College, Parsundakhal, Pauri Garhwal, Uttarakhand

*Corresponding Author Email: madanmohan20863@gmail.com

Received: 2.9.2020; Revised: 12.10.2020; Accepted: 28.10.2020

©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract

Two types of years are described in Indian calculation method astrology, the sun year and the moon year. Sun year is 365 days and 6 hours long and the lunar year is considered to be of 354 days. If we calculate the difference between two years, it comes to be of 11 days and it becomes roughly one month in three successive years. Thus one lunar month comes extra into existence. This month is called as “Purushottam maas”, “Adhik mas” or an extra month. The overlord of this month is considered as “Lord Krishna” who was also born in this month. The present paper depicts the analysis of this extra month in view of “Shri Mad Bhagwat Mahapuran” and other literary scripts.

Keywords: Extra Month, Shrimad Bhagwat Puran, Analysis

पुरुषोत्तम मास—एक विवेचन

मदन मोहन नौडियाल

प्रवक्ता, रा0इ0का0 परसुण्डाखाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सारांश

भारतीय गणना पद्धति ज्योतिष शास्त्र में दो प्रकार के वर्षों का वर्णन मिलता है। एक सूर्य वर्ष तथा दूसरा चन्द्र वर्ष। सूर्य वर्ष 365 दिन व करीब 6 घण्टे का होता है और चन्द्र वर्ष 354 दिनों का माना गया है, दोनो वर्षों का यदि हम अन्तर करें तो यह अन्तर 11 दिन का होता है, और तीन वर्ष में लगभग 1 माह का अन्तर होता है। एक चन्द्र वर्ष माह अस्तित्व में आता है। इसी अतिरिक्त मास को अधिकमास, मलिन मास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है, और इस मास के अधिपति भगवान कृष्ण को माना जाता है। भगवान कृष्ण का जन्म भी चन्द्रवर्ष में हुआ था। कोई भी देवता इस अतिरिक्त मास को अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था। सम्पूर्ण देवताओं के विनय करने पर स्वयं वहन किया, वशिष्ठ सिद्धान्त में सूर्य वर्ष व चन्द्र वर्ष दोनों का अन्तर देखने को मिलता है।

कुंजी शब्द : मलमास, अधिकमास, श्रीमद्भागवत पुराण, विश्लेषण

भारतीय गणना पद्धति के अनुसार प्रत्येक सूर्य वर्ष 365 दिन और करीब 6 घण्टे का होता है। वही चन्द्रवर्ष 354 दिनों का माना जाता है। दोनो वर्षों के बीच लगभग 11 दिनों का अन्तर होता है। जो हर तीन वर्षों में लगभग एक मास के बराबर हो जाता है। इसी अन्तर को पाटने के लिए हर तीन साल में एक चन्द्रमास अस्तित्व में आता है, जिसे अतिरिक्त होने के कारण अधिकमास, मलमास या पुरुषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। सनातन धर्म में इसका विशेष महत्व है। सम्पूर्ण भारत में इस पूरे मास में पूजा पाठ, भगवत् भक्ति, व्रत उपवास, जप और योग, धार्मिक कार्य किये जाते हैं। धार्मिक मान्यता है कि अधिकमास में किये गये धार्मिक कार्यों का दस गुना फल प्राप्त होता है। श्रद्धालु भगवान को प्रसन्न करने के लिए पुरी श्रद्धा



व भक्ति के साथ इहलोक और परलोक सुधारते हैं। वशिष्ठ सिद्धान्त के अनुसार भारतीय ज्योतिष सूर्य मास और चन्द्रमास की गणना के अनुसार चलता है, अधिकमास या पुरुषोत्तम मास 32 माह 16 दिन और 8 घड़ी के अन्तर में आता है, इसका प्राकट्य सूर्य वर्ष और चन्द्र वर्ष के बीच के अन्तर का सन्तुलन करने के लिए होता है। अधिकमास या पुरुषोत्तम मास के स्वामी भगवान कृष्ण हैं। पुरुषोत्तम भगवान कृष्ण का एक नाम है।

श्रीमद्भागवत महापुराण में भगवान कृष्ण को पुरुषोत्तम नाम से ऋषियों द्वारा सम्बोधन किया गया है—

“त्वं नस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो¹
यनेद मादि पुरुषात्मगतं संसर्जः
तद् विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल
रक्षा गृहीत व पुशाः पुनरन्वमंसथाः”

अर्थात् पुरुषोत्तम अपने तपस्या के द्वारा ही अपने में लीन हुए जगत की फिर से रचना की थी और कृपा करके उसी आत्मतेजः स्वरूप श्रेष्ठ तपस्या का उपदेश आपने हमारे लिए भी किया था, इस दैत्य (हिरण्यकशिपु) ने उसी तपस्या का उच्छेद कर दिया था शरणागतवत्सल! उस तपस्या की रक्षा के लिए अवतार ग्रहण करके आपने हमारे लिए फिर से उसी उपदेश का अनुमोदन किया है।

अतिरिक्त मास या मलमास या खरमास या पुरुषोत्तम मास का अधिपति बनने के लिए कोई देवता तैयार नहीं हुआ, ऋषियों ने भगवान श्रीकृष्ण से आग्रह किया कि वे इस मास का भार अपने ऊपर लें, और भगवान कृष्ण ने अपनी स्वीकृति देते ही मलमास, पुरुषोत्तम मास बन गया। सांकेतिक अर्थ में यह मास तनमन से पवित्र होने का समय है, श्रद्धालु व्रत, उपवास, ध्यान योग, भजन कीर्तन में संलग्न होकर सामान्य पुरुष से उत्तम पुरुष बनकर अपने मन का मैल धोते हैं। पी0वी0 काणे का मत है कि आंग्ल काल की गणना लीप एअर में फरवरी 28 की जगह 29 दिन की हो जाती है। यही भारतीय गणनानुसार तीन वर्ष में बढ़कर 1 माह हो जाता है। इस माह को भारतवर्ष के राज्यों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है, यथा महाराष्ट्र में लौद का महीना, कई राज्यों में यथा पंजाब में खरमास, डोडामास आदि नामों से जाना जाता है। संक्षेप में मलमास 12 माह में बचे समयकाल का मल है। पुरुषोत्तम मास या मलमास की कथा का पौराणिक आधार हिरण्यकश्यप के वध से जुड़ी है कथा विस्तृत रूप से श्रीमद्भागवत महापुराण में स्पष्ट परिलक्षित होती है। पौराणिक आधार पर हिरण्यकशिपु ने ब्रह्माजी की कठिन तपस्या की थी

“हिरण्यकशिपू राजन्नजेयम जराभरम्²
आत्मानम् प्रति द्वन्द्व मेकराजं व्यधित्सत्”

अर्थात् हिरण्यकशिपु ने यह विचार किया कि मैं अजेय, अजर, अमर और संसार का एकक्षत्र सम्राट बन जाऊँ जिससे कोई मेरे सामने खड़ा न हो सके।

“स तेपे मन्दरद्रोण्यां तपः परम दारुणम्
ऊर्ध्ववाहुर्नशोदृष्टिः पादाडश्टाश्रितावनिः।”

अर्थात् इसके लिए वह मन्दरांचल की एक घाटी में जाकर अत्यन्त दारुण तपस्या करने लगा, वहाँ वह हाथ ऊपर उठाकर आकाश की ओर देखता हुआ वह पैर के अंगूठे के बल पृथ्वी पर खड़ा हो गया और हिरण्यकशिपु की कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी वरदान देने हेतु प्रस्तुत हुए, उन्होंने कहा कि —
ब्रह्मोवाच,

“उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते तपः सिद्धोऽसि काश्यपः³
वरदोऽहमनु प्राप्तो त्रियतामीप्सितो वरः”

ब्रह्माजी बोले— बेटा हिरण्यकशिपु उठो, उठो तुम्हारा कल्याण हो गया है। मैं तुम्हें वर देने के लिए आया हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो, बेखटके मांग लो।

“ नैतत्पूर्वर्षयश्चः कुर्त करष्यन्ति चापरे।³
निरम्बुर्घायेत्प्राणान् को वै दिव्यसमाःशतम्”

ऐसी कठिन तपस्या न तो पहले किसी ऋषि ने की थी और न आगे ही कोई करेगा, भला ऐसा कौन है जो देवताओं के सौ वर्षों तक बिना पानी के जीता रहे, हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा जी से कहा



यदि दास्यस्यभिमतान् वरान्मे वरदोत्तमः⁴
 भूते भ्यस्त्वद्विसृष्टेभ्यो मृत्युर्मा भून्मम् प्रभो
 नान्तर्वहिर्दिवा नक्तमन्यस्मादपि चायुधै ।
 न भूमो नाम्बरे मृत्युर्न नरैर्न मृगैरपि
 व्यसुभिर्वा सुभद्विर्व सुरासुर महो रगैः
 अप्रतिद्वन्दतां युद्धे ऐकपत्यं च देहिनाम
 सर्वेशां लोकपालानां महिमानं यथाडात्मनः
 तपोयोग प्रभावाणां यन्नरिश्यति कर्हिचित

अर्थात् हे प्रभो आप समस्त वरदाताओं में श्रेष्ठ है, यदि आप मुझे अभीष्ट वर देना चाहते हैं तो ऐसा वर दीजिये कि आपके बनाये हुए किसी भी प्राणी से चाहे वह मनुष्य हो या पशु प्राणी हो या अप्राणी देवता हो या दैत्य अथवा नागादि से किसी से भी मेरी मृत्यु न हो, भीतर बाहर, दिन में, रात्रि में आपके बनाये प्राणियों के अतिरिक्त और भी किसी जीव से, अशत्रु—शस्त्र से पृथ्वी या आकाश में, कहीं भी मेरी मृत्यु न हो, युद्ध में कोई मेरा सामना न कर सके। मैं समस्त प्राणियों का एकक्षत्र सम्राट हूँ। इन्द्रादि समस्त लोकपालों में जैसी आपकी महिमा है वैसी ही मेरी भी हो। तपस्वियों और योगियों को जो अक्षय ऐश्वर्य प्राप्त है वही मुझे भी दीजिए। ब्रह्माजी ने “तथास्तु” कह हिरण्यकशिपु को इच्छित वर दिया, लेकिन मृत्यु तो अटल सत्य है। उसके वध के लिए भगवान ने नृसिंह रूप धारण किया था और उस समय न दिन था और न रात थी गोधुली समय था, न वह घर के अन्दर था न बाहर, देहरी पर था। भगवान ने कोई अशत्रु भास्त्र धारण नहीं किया था अपने नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला, फिर नृसिंह ब्रह्माजी की सृष्टि में भी नहीं आते हैं, वे मुख से शेर और शरीर से मनुष्य थे। बारह माह में भी उसकी मृत्यु नहीं हुई बल्कि व यही पुरुषोत्तम मास या मलमास या अतिरिक्त मास था श्रीमद् भागवत् में भगवान के स्वरूप का इस प्रकार वर्णन है।

सत्यं विधातुं निजमृत्युमाशित⁵
 व्याप्तिं च भूतेश्व अखिलेशु चात्मनः
 अदृश्यताद्धेतुरूपं मुद्गहनं
 स्तम्भे सभायां न मृगंन मानुषम्

भगवान नृसिंह सेवक प्रह्लाद और ब्रह्माजी की वाणी सत्य करने और समस्त पदार्थ में अपनी व्यापकता दिखाने के लिए सभा के भीतर उसी खम्भे में बड़ा ही विचित्र रूप धारण करके भगवान प्रकट हुए। वह रूप न तो पूरा-पूरा सिंह का था न ही मनुष्य का था। अतः समस्त जड चेतन में ईश्वर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का वास है। यथा

यस्मात्क्षरं मतीतोडहमछरादपि चोत्तमः⁸
 अतोडस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः

अर्थात्— श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं नाशवान जड वर्ग क्षेत्र से तो सर्वथा अतीत हूँ और अविनाशी जीवात्मा से भी उत्तम हूँ इसलिए लोक में और वेद में भी पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। सनातन संस्कृति व धर्म के अनुसार प्रत्येक साधक को मलिन मास या पुरुषोत्तम मास में भगवान श्रीकृष्ण का पुरुषोत्तम योग नाम का श्रीमद् भागवद् गीता का 15वाँ अध्याय पढ़ना चाहिए। इससे अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

- 1 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, पृष्ठ सं० 713, 43वाँ श्लोक
- 2 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, पृष्ठ सं० 681, श्लोक सं० 12
- 3 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, पृष्ठ सं० 682, श्लोक सं० 17, 19
- 4 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, पृष्ठ सं०



684,685 श्लोक सं० 35,36,37

- 5 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, पृष्ठ 709 श्लोक सं० 18
- 6 श्रीमद् भागवत महापुराण (लेखक महर्षि वेद व्यास), गीता प्रेस गोरखपुर सप्तम स्कन्ध, अध्याय 15 श्लोक सं० 18
- 7 पी०वी० काणे धर्मशास्त्र का इतिहास
- 8 डा० दामोदर प्रसाद शास्त्री कालमाध्व, स्मृति कौस्तुभ, निर्णय सागर